DOI: 10.51220/hjssh.v7i1.10

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 7 pp.67 - 77, December, 2012, ISSN. 0975 - 9891

मध्य हिमालयीय क्षेत्र के पर्वतीय राज्य एवं उत्तर मुग़लकालीन शासक (सन् 1707-1761 ई0)

एस0 ए0 एच0 ज़ैदी एवं प्रवेश कुमार*

इतिहास विभाग,

हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

*इतिहास विभाग, विद्यापीठ डिग्री कालेज, बिलासपुर, सहारनपुर, उ0प्र0

Received: 19-11-2012 **Revised: 27-11-2012** **Accepted: 06-12-2012**

Abstract

सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में मध्य हिमालयी क्षेत्र में सिरमौर, गढ़वाल एवं कुमाऊँ नामक तीन पर्वतीय राज्य अवस्थित थे। यद्यपि अकबर से औरंगज़ेब तक शक्तिशाली मुग़ल शासक इन पर्वतीय राज्यों पर अपना वर्चस्व बनाये रखने में सफल रहे, परन्तु औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात मुग़ल साम्राज्य में उत्पन्न अराजकतापूर्ण परिस्थितियों में उत्तर मुग़लकालीन शासकों के लिए इन पर्वतीय राज्यों पर अपना वर्चस्व बनाये रखना एक चुनौती पूर्ण कार्य था। प्रस्तुत शोध-आलेख में उत्तर मुग़लकालीन शासकों (सन् 1707-1761) द्वारा मध्य हिमालयी क्षेत्र के इन तीनों पर्वतीय राज्यों पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए किये गये राजनीतिक-कूटनीतिक एवँ सामरिक प्रशासनिक उपायों और उन उपायों को असफल बनाने के लिए इन पर्वतीय राज्यों द्वारा किये गये प्रतिरोध आदि का अध्ययन-विश्लेषण किया गया है।

KEY-WORDS: मध्य हिमालयी क्षेत्र, पर्वतीय राज्य, उत्तर भारत, मुगल शासक

I

पश्चिम में जम्मू-कश्मीर से पूर्व में अरुणाँचल प्रदेश तक विस्तृत पर्वतीय अंचल को हिमालयी क्षेत्र कहा जाता है। इस सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्र को तीन भागों में विभक्त किया गया है- पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र, मध्य हिमालयी क्षेत्र एवं पूर्वोत्तर हिमालयी क्षेत्र। पश्चिमी एवं पूर्वी हिमालयी क्षेत्र के मध्य में स्थित लगभग 54,000 वर्ग कि0मी0 का पर्वतीय अँचल मध्य हिमालयी क्षेत्र कहलाता है। पन्द्रहवीं शताब्दी से अट्ठारहवीं शताब्दी तक इस मध्य हिमालयी क्षेत्र में सिरमौर, गढ़वाल एवं कुमाऊँ नामक तीन पर्वतीय राज्य अवस्थित थे। सन् 1526 में हुए पानीपत के प्रथम युद्ध और उसके फलस्वरूप उत्तर भारत में हुए सत्ता परिवर्तन की कोई तात्कालिक प्रतिक्रिया मध्य हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित इन पर्वतीय राज्यों पर नहीं हुई, परन्तु सम्राट अकबर द्वारा मुग़ल साम्राज्य को व्यवस्थित कर लिए जाने के पश्चात् इन पर्वतीय राज्यों पर मुग़ल प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयास किये गये।[1] सन् 1556 से 1707 की अवधि में मुग़ल शासकों ने मध्य हिमालयी क्षेत्र के इन तीनों पर्वतीय राज्यों की परस्परिक शत्रुता का लाभ उठा कर इस पर्वतीय अँचल में अपना वर्चस्व बनाये रखा।[2]

औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार संघर्ष, दरबारियों की उत्तरोत्तर उग्र होती विज़ारत प्राप्ति के लिए अमीरों के बीच शक्ति-प्रदर्शन एवं कुचक्रों की प्रवृत्ति, साम्राज्य के विकेन्द्रीकरण के लिए

सक्रिय तत्वों की शक्ति में वृद्धि, जागीरों की मांग में वृद्धि के कारण ख़ालसा भूमि का अमीरों को आवंटन तथा शासन शक्तियों के उपभोग के लिए वज़ीरों और बादशाहों के बीच संघर्षों के चलते उत्तर मुग़लकालीन शासकों के लिए सूबा दिल्ली और सूबा लाहौर से सम्बद्ध इन मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों पर अपना प्रभुत्व बनाये रखना अत्यधिक दुष्कर कार्य था।[3] उस संक्रमणकाल में उत्तर मुग़लकालीन शासकों (सन 1707–1761) द्वारा मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों पर अपने प्रभुत्व को बनाये रखने के लिए किये गये राजनीतिक–कूटनीतिक, प्रशासनिक–सामरिक उपायों और इन पर्वतीय राज्यों द्वारा उन उपायों–प्रयासों के प्रतिरोध आदि का अध्ययन–विश्लेषण प्रस्तुत शोध आलेख में किया गया है।

उत्तर मुग़लकाल के दौरान सन् 1707–1719 की अवधि में मुग़ल शासकों एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों के बीच सम्बन्धों को बन्दाबहादुर के विद्रोह ने सर्वाधिक प्रभावित किया औरंगज़ेब के शासनकाल के अन्तिम वर्षों में सिक्ख गुरू गोविन्दसिंह ने मध्य हिमालयी क्षेत्र के राज्यों सिरमौर एवं गढ़वाल के बीच स्थित पौंटा नामक स्थान पर एक दुर्ग बनाकर वहाँ आवास करना आरम्भ कर दिया था।[4] स्थानीय इतिहास से ज्ञात होता है कि उस समय पौंटा नामक स्थान पर स्वामित्व के लिए सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं के बीच विवाद था। इस विवाद को समाप्त करने तथा गढ़वाल के राजा के विरुद्ध गुरू गोविन्दसिंह की सैन्य शक्ति का उपयोग करने के दोहरे लाभ की आशा में सिरमौर के राजा ने पौंटा नामक स्थान पर गुरू गोविन्दसिंह को अपने लिए दुर्ग एवं आवास बनाने की न केवल अनुमति प्रदान कर दी, बल्कि इस कार्य में सहयोग भी किया।[5] गढ़वाल का राजा अपने पड़ोसी सिरमौर के राजा की इस कूटनीतिक–सामरिक चाल को समझ गया। अतः उसने भी गुरू गोविन्दसिंह के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर लिए।[6] औरंगज़ेब उस समय दक्षिण भारत में था। सिरमौर, गढ़वाल एवं गुरू गोविन्दसिंह के बीच एक गुट बनता देख औरंगज़ेब का चिन्तित होना स्वाभाविक था, वह भी एक ऐसे दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में, जहाँ मुग़ल सेना का पहुँच पाना भी दुष्कर था। इसी बीच कुछ अन्य पर्वतीय राजाओं ने, जो गुरू गोविन्दसिंह की बढ़ती हुई सैन्य शक्ति को स्वयं के लिए घातक अनुभव कर रहे थे, औरगंज़ेब को इस सम्भावित संकट से अवगत कराया। अतः औरगंज़ेब ने सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं को आदेश दिया कि वह गुरू गोविन्दसिंह को अपने इलाकों से बाहर कर दें। फलस्वरूप गुरूगोविन्दसिंह पौंटा से आनन्दपुर नामक स्थान पर आ गये।[7] आनंदपुर नामक स्थान कहलूर के राजा के अधीन भू–प्रदेश में था और कहलूर तथा सिरमौर के सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण थे, जबकि सिरमौर के राजा तथा गुरू गोविन्दसिंह के बीच मित्रता थी। अतः कहलूर का राजा चिंतित हो गया उसने औरंगज़ेब से गुरू गोविन्दसिंह को आनन्दपुर से निष्कासित करने के लिए सैनिक सहायता मांगी। अंततः गुरू गोविन्दसिंह को आनन्दपुर छोड़ना पड़ा।[8]

गुरू गोविन्दसिंह ने औरगंज़ेब से भेंट करके आनन्दपुर पुनः प्राप्त करने का निश्चिय किया और दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान किया, परन्तु इससे पूर्व ही औरंगज़ेब की मृत्यु हो गई। वहीं नाँदेड़ नामक स्थान पर एक पठान ने गुरू गोविन्दसिंह की हत्या कर दी। गुरू गोविन्दसिंह की हत्या का बदला लेने तथा सिक्ख प्रभुत्व की स्थापना के लिए गुरू गोविन्दसिंह के एक प्रबल अनुयायी बन्दाबहादुर ने बड़ी संख्या में सिक्खों को एकत्रित करके मुग़ल सत्ता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।[9] उसने बारी दोआब तथा सरहिन्द में व्यापक स्तर पर लूटमार की और दिल्ली से पंजाब का सम्पर्क काट देने के उददेश्य से सरहिन्द से दिल्ली जाने वाले मार्ग पर अधिकार करने का प्रयास किया। सरहिन्द के फौजदार वज़ीर ख़ाँ ने उसे रोकने के लिए उसका सामना किया, परन्तु उसने मुग़ल सेना को पराजित कर दिया और वज़ीर ख़ाँ की हत्या कर दी।[10]

मुग़ल सेना द्वारा पीछा किये जाने पर उसने सरहिन्द से ऊपर स्थित पर्वतीय राज्य सिरमौर में लोहागढ़ नामक स्थान पर शरण ले ली। बन्दाबहादुर की इन आरम्भिक सफलताओं से प्रभावित होकर सिरमौर के राजा भूपप्रकाश ने उसके साथ सहयोग करना आरम्भ कर दिया। मुग़ल शासक बहादुरशाह ने सिरमौर के राजा को आदेश दिये कि वह बन्दाबहादुर के साथ सहयोग न करे और उसके दमन अभियान में मुग़ल सेना का साथ दे, परन्तु सिरमौर का राजा मुग़ल सेना के साथ सहयोग का केवल दिखावा ही करता रहा। वास्तव में उसने दुरभि नीति अपनाई और बन्दाबहादुर तथा मुग़ल शासक दोनों को ही सन्तुष्ट करने का प्रयास किया। सिरमौर के राजा के इस व्यवहार को देखकर मुग़ल शासक बहादुरशाह ने सिरमौर के पड़ोसी गढ़वाल के राजा फतेहसिंह को बन्दाबहादुर के विरुद्ध कार्रवाई करने के आदेश दिये, परन्तु उसने भी कोई कार्रवाई नहीं की। अन्ततः मुग़ल सेना द्वारा लोहागढ़ की घेराबन्दी किये जाने पर बन्दाबहादुर सिरमौर के राजा के अधीन प्रदेश से सकुशल निकल भागने में सफल रहा।[11]

यह सूचनायें प्राप्त होने पर कि सिरमौर के राजा की सहायता से ही बन्दाबहादुर मुग़ल सेना की घेराबन्दी से निकल भागा है, मुग़ल-शासक बहादुरशाह ने बन्दाबहादुर के दमन अभियान हेतु नियुक्त सेनानायक को आदेश दिया कि वह सिरमौर की राजधानी नाहन पर आक्रमण करे और राजा को बन्दी बना कर दिल्ली भेजे। मुग़ल सेना ने सिरमौर के राजा को बन्दी बनाकर दिल्ली भेज दिया। उसे सलीमगढ़ स्थित कारागार में डाल दिया गया।[12] मुग़ल शासक द्वारा सिक्ख विद्रोहियों के समर्थक सिरमौर के राजा को बन्दी बना लिए जाने, बन्दाबहादुर के साथियों को मृत्युदण्ड दिये जाने और बन्दाबहादुर के दमनार्थ अनवरत सैनिक कार्रवाइयों आदि को देख कर गढ़वाल का राजा भयभीत हो गया। यद्यपि उसने पेशकश एवं नज़राना आदि भेज कर मुग़ल शासक के साथ सम्बन्ध सुधार लिए, परन्तु सन् 1711-12 में उसने पुनः सिक्ख विद्रोहियों को अपने राज्य में शरण प्रदान कर मुग़ल शासक को क्रोधित कर दिया।[13] उस समय तक कुमाऊँ के राजा ने अपने राज्य में कुछ विद्रोहियों को पकड़ कर मुग़ल शासक के साथ मधुर सम्बन्ध बनाये रखे थे,[14] परन्तु मुग़ल शासक इन तीनों पर्वतीय राजाओं की दुरभि नीतियों से कुपित था और इन राजाओं को मुग़ल प्रभुत्व को पूर्व की भांति स्वीकार करने के लिए बाध्य करना चाहता था। अतः उसने इन पर्वतीय राजाओं के आर्थिक संसाधनों में कटौती करके, इन राजाओं की आय में कमी करके, इन्हें दुर्बल बनाने और मुग़ल शासक की कृपा पर आश्रित करने के लिए इन राजाओं से उन भू-प्रदेशों को वापस ले लिए जाने का निर्णय लिया, जो भू-प्रदेश इन राजाओं को सम्राट अकबर के समय से औरंगज़ेब के समय तक इनाम जागीरों आदि के रूप में प्रदान किये गये थे। अपनी इस नीति को कार्य रूप देने से पूर्व ही फरवरी, सन् 1712 में बहादुरशाह की मृत्यु हो गई।[15]

बहादुरशाह के उत्तराधिकारी जहाँदारशाह (सन् 1712-1713) ने मध्य हिमालयी क्षेत्र के राजाओं के प्रति बहादुरशाह की अपेक्षा उदारनीति अपनाई और उनके साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में पहल करते हुए सिरमौर के राजा भूपप्रकाश को कारागार से मुक्त कर दिया। भूपप्रकाश ने वचन दिया कि वह बन्दाबहादुर के दमन अभियान में मुग़ल सेना के साथ सहयोग करेगा। सिरमौर के राजा ने वास्तव में बन्दाबहादुर के दमन अभियान में मुग़ल सेनाओं के साथ सहयोग किया और विद्रोही सिक्खों को सिरमौर राज्य से भागना पड़ा।[16] कुमाऊँ के राजा ने भी विद्रोहियों के प्रति कठोर कार्रवाइयाँ करके उन्हें अपने इलाकों से निकाल दिया,

परन्तु गढ़वाल का राजा पूर्व की भांति विद्रोही सिक्खों, गुजरों एवं जाटों को शरण प्रदान करता रहा।[17] इससे पूर्व कि वह गढ़वाल के राजा के विरुद्ध कार्रवाई करता, फर्रुख़सियर ने सत्ता पर अधिकार कर लिया।

फर्रुख़सियर (सन् 1713-1719) ने इन पर्वतीय राजाओं के प्रति कठोर नीति अपनाई। उसने इन पर्वतीय राजाओं के अधीन भू-प्रदेशों में कटौती करने की बहादुरशाह की नीति पर अमल करना आरम्भ किया। फलस्वरूप सिरमौर एवं कुमाऊँ के राजाओं ने दुरभि नीतियों को छोड़ कर मुग़ल शासक के प्रति पूर्ण सहयोग करना आरम्भ कर दिया, परन्तु गढ़वाल का राजा उन विद्रोहियों को शरण प्रदान करता रहा, जो गढ़वाल के पर्वतीय प्रदेशों में छिपे हुए थे और वहाँ से निकल कर सम्भल तथा मुरादाबाद के सीमावर्ती इलाकों में अराजकता फैला रहे थे। गढ़वाल के राजा के अधीन दून घाटी में भी सिक्ख एवं गुजर विद्रोही सक्रिय थे और सहारनपुर तक लूटमार कर रहे थे।[18] मुग़ल सेना द्वारा पीछा किये जाने पर गढ़वाल के पर्वतीय प्रदेश में शरण लेते थे। मुग़ल सेना इन विद्रोहियों के दमन के लिए सहारनपुर एवं देहरादून से मिलने वाली गढ़वाल की दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर सैनिक अभियान कर सकती थी। अतः गढ़वाल के राजा ने अपनी अधिकांश सेना इस सीमा पर तैनात कर दी। फलस्वरूप कुमाऊँ के साथ लगने वाली गढ़वाल की पूर्वी सीमा असुरक्षित हो गई। मुग़ल शासक फर्रुख़सियर ने शाहजहाँ एवं औरंगज़ेब की नीति का अनुसरण करते हुए गढ़वाल के राजा पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से कुमाऊँ के राजा जगतचन्द को गढ़वाल पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। अन्ततः सन् 1713 में कुमाऊँ के राजा ने गढ़वाल पर आक्रमण किया और उसे मुग़ल सम्राट के सम्मुख समर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया।[19] फलस्वरूप गढ़वाल के राजा ने विद्रोहियों के साथ न केवल सहयोग करना बन्द कर दिया, बल्कि देहरादून से विद्रोहियों को खदेड़ने के लिए अपनी सेना भेज कर मुग़ल सेना के साथ सहयोग भी किया।[20]

सन् 1715 के मध्य तक गढ़वाल, सिरमौर एवं पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र के अधिकांश राजाओं ने विद्रोही सिक्खों एवं उनके समर्थकों का साथ छोड़ दिया। फलस्वरूप विद्रोही सिक्ख नेता बन्दाबहादुर ने 17 दिसम्बर, सन् 1715, को गुरूदासपुर में मुग़ल सेना के सम्मुख समर्पण कर दिया। इस प्रकार सन् 1708 में बन्दाबहादुर के विद्रोह के कारण इस पर्वतीय अंचल में जो अराजकता फैली थी । सन् 1715 में उस पर मुग़ल शासक ने नियन्त्रण स्थापित कर लिया तथा सिरमौर, गढ़वाल एवं कुमाऊँ के राजाओं पर भी मुग़ल शासक ने एक सीमा तक प्रभुत्व की पुनर्स्थापना कर ली।

सन् 1707 से 1719 तक, बहादुरशाह (प्रथम) से फर्रुख़सियर के शासनकाल में मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल शासकों के सम्बन्धों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है उक्त अवधि में इन पर्वतीय राज्यों, विशेषकर सिरमौर एवं गढ़वाल के साथ मुग़ल शासकों के सम्बन्ध बन्दाबहादुर की विद्रोहात्मक गतिविधियों के कारण बिगड़े। सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं ने बन्दाबहादुर के विद्रोह के आरम्भिक दौर में दुरभि नीतियाँ अपनाई। उन्होंने अपने द्वारा मुग़ल शासकों एवं बन्दाबहादुर दोनों के लिए ही खुले रखे। ऐसा करना उनकी विवशता भी थी। उस समय मुग़ल साम्राज्य एवं मुग़ल शासकों की जो दशा-दिशा थी, उसे देखकर इन पर्वतीय राजाओं के लिए विद्रोही सिक्खों की सैन्य शक्ति को अनदेखा करके मुग़लों का समर्थन-सहयोग करना दुष्कर था।

मुग़ल दरबार की गुटबन्दियों, विद्रोहियों के दमनार्थ नियुक्त सेनानायकों के बीच मतभेद, वज़ीर के विरोधी अमीरों द्वारा विद्रोह के दमन में शिथिलता उत्पन्न कर वज़ीर की स्थिति को दुर्बल बनाने की चालों,

सिक्खों के दमन अभियान के बीच में ही बहादुरशाह की मृत्यु, एक वर्ष के भीतर ही बहादुरशाह के उत्तराधिकारी जहाँदारशाह का तख़्तापलट, सिंहासनारूढ़ होने जाने के पश्चात् भी फर्रुख़सियर की डांवाडोल स्थिति और बन्दाबहादुर की आरम्भिक सफलताओं, विद्रोहियों द्वारा सरहिन्द के शक्तिशाली मुग़ल फौजदार वज़ीर ख़ाँ की हत्या, बन्दाबहादुर के समर्थकों की बढ़ती हुई संख्या आदि घटनाओं एवं परिस्थितियों ने इन पर्वतीय राजाओं का झुकाव मुग़ल सत्ता के विरोधी बन्दाबहादुर की ओर कर दिया। कालान्तर में जैसे-जैसे मुग़ल सेनायें विद्रोहियों पर नियन्त्रण स्थापित करती गई, बन्दाबहादुर के समर्थकों की संख्या घटती गई। मुग़ल शासक द्वारा सिरमौर के राजा को कारागार में डाल देने तथा कुमाऊँ के राजा द्वारा मुग़ल शासक के पक्ष में गढ़वाल पर आक्रमण और गढ़वाल के राजा की निर्णायक पराजय आदि के फलस्वरूप अन्ततः मुग़ल शासकों ने परिस्थितियों को नियन्त्रि कर लिया।

II

सन् 1707-1719 के काल में मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल शासकों के बीच राजनीतिक-कूटनीतिक सम्बन्धों को बन्दाबहादुर के नेतृत्व में उद्वेलित सिक्ख शक्ति ने प्रभावित किया और सन् 1719-1761 के काल में इन पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल शासकों के सम्बन्धों को कटेहर (गंगा-यमुना दोआबा) में नवस्थापित रुहेला शक्ति ने प्रभावित किया। औरंगज़ेब के समय में ही कटेहर क्षेत्र (कालान्तर में रुहेलखण्ड) में बड़ी संख्या में रुहेलों की बस्तियाँ स्थापित हो चुकी थी। औरंगज़ेब के उत्तराधिकारी बहादुरशाह (सन् 1707-1712) के समय में अफगानिस्तान के रोह नामक स्थान से दाऊद ख़ाँ नामक एक रुहेला फौजी कटेहर में आ बसा। उसने शीघ्र ही रुहेला सैनिकों को एकत्रित कर एक सैन्य दल गठित कर लिया और उजरत पर सैनिक सेवा उपलब्ध कराने लगा। जागीरों पर बलपूर्वक अधिकार करने और अमीरों द्वारा शक्ति प्रदर्शन-शक्ति परीक्षण की प्रवृत्ति में वृद्धि ने दाऊद ख़ाँ एवं उसके सैनिकों का महत्व बढ़ा दिया। आरम्भिक दौर में छोटे-मोटे जागीरदारों की सैनिक सेवा करने के पश्चात् दाऊद ख़ाँ कटेहर की सीमाओं के निकट अवस्थित पर्वतीय राज्य कुमाऊँ के राजा देवीचन्द (सन् 1720-1730) की सेवा में आ गया।[21] उसने देवीचन्द से कुमाऊँ के तराई प्रदेश की फौजदारी प्राप्त कर ली। दाऊद ख़ाँ ने तराई प्रदेश की सुरक्षा को सुदृढ़ किया और कठोरता से राजस्व की वसूली आरम्भ की। फलस्वरूप कुमाऊँ के राजा की आय में वृद्धि हो गयी। उसने अपने राज्य के विस्तार की योजना बनानी आरम्भ की। दाऊद ख़ाँ की सैन्य शक्ति और अपनी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति के बल पर उसने अपने तराई प्रदेश के निकटवर्ती मुग़ल साम्राज्य की सरकार/चकला बरेली, मुरादाबाद एवं सम्भल के सीमावर्ती परगनों पर अधिकार करके कृषकों तथा ज़मींदारों से राजस्व वसूलना आरम्भ कर दिया।[22]

मुग़ल साम्राज्य की सीमाओं में अतिक्रमण एक गम्भीर अपराध था। अतः शाही सेना ने कुमाऊँ के राजा को दंडित करने के लिए सैनिक अभियान करके न केवल कुमाऊँनी एवं रुहेला सैनिकों को खदेड़ दिया, बल्कि कुमाऊँ के राजा के अधीन तराई प्रदेश के एक बड़े भू-भाग पर भी अधिार कर लिया।[23] इस प्रकरण के कारण कुमाऊँ-मुग़ल सम्बन्ध बिगड़ गये और कालान्तर में जब सन 1743-44 में रुहेलों ने कुमाऊँ के राजा का उत्पीड़न करना आरम्भ किया, तब कुमाऊँ के राजा की सहायता याचना की मुग़ल शासक ने उपेक्षा कर दी।[24] अन्ततः सन् 1745 के आरम्भ में दाऊद ख़ाँ के उत्तराधिकारी अली मौहम्मद ख़ाँ ने कुमाऊँ पर

आक्रमण करके राजधानी अल्मोड़ा पर अधिकार कर लिया। इस अवसर पर गढ़वाल के राजा ने कुमाऊँ के राजा के साथ मिल कर रुहेलों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयास किया, परन्तु रुहेलों ने इन दोनों पर्वतीय राजाओं को पराजित करके उनसे युद्ध क्षतिपूर्ति एवं वार्षिक कर की मांग की।[25]

रुहेलों द्वारा कुमाऊँ को करद राज्य बना लिए जाने, कुमाऊँ के राजा के अधीन तराई प्रदेश के कई उपजाऊ परगनों पर अधिकार कर लेने आदि से अवध का नवाब और मुग़ल दरबार में ईरानी दल का नेता सफदरजंग चिंतित हो गया। अवध की सीमायें रुहेलखण्ड से मिलती थीं। अत: सफदरजंग रुहेलों की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना चाहता था। उसने मुग़ल शासक मौहम्मदशाह से रुहेलों के विरुद्ध कार्रवाई करने का आग्रह किया और यह तर्क दिया कि गढ़वाल एवं कुमाऊँ पूर्व में मुग़ल साम्राज्य की सरकारें रही हैं, उन पर रुहेला का आधिपत्य मुग़ल सम्राट के लिए एक चुनौती है, इसी बीच कुमाऊँ एवं गढ़वाल के राजाओं ने भी अपने प्रतिनिधि मुग़ल दरबार में भेज कर रुहेलों के उत्पीड़न से मुक्ति की मांग की।[26]

यद्यपि वज़ीर कमरुद्दीन ख़ाँ रुहेलों का पक्षधर होने के कारण रुहेलों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं होने देना चाहता था, परन्तु सफदरजंग रुहेलों के विरुद्ध कार्रवाई के लिए मुग़ल शासक पर निरन्तर दबाव बनाये हुए था। वज़ीर ने आर्थिक तंगी का बहाना करके रुहेलों के विरुद्ध अभियान न कर पाने की विवशता दिखाई, परन्तु सफदरजंग ने अपने सूबे की आय से युद्ध व्यय को वहन करने का प्रस्ताव रख कर वज़ीर को शान्त कर दिया। फलस्वरूप सन् 1745 में शाही सेना ने रुहेलों पर आक्रमण किया और रुहेला सरदार अली मौहम्मद ख़ाँ समर्पण के लिए बाध्य हो गया।

युद्धोपरान्त कुमाऊँ के राजा ने मुग़ल शासक से याचना कर अपने तराई प्रदेश के वह परगने प्राप्त कर लिए, जिन पर रुहेलों ने कब्ज़ा कर लिया था।[27] रुहेलों की पराजय के पश्चात् सफदरजंग ने कुमाऊँ की तराई में कुछ परगने कब्ज़ाने का प्रयास किया, परन्तु मुग़ल शासक द्वारा मध्यस्थता किये जाने पर वह परगने कुमाऊँ के राजा को पुन: प्राप्त हो गये।[28] अली मौहम्मद ख़ाँ ने गढ़वाल के पाद प्रदेश (कोह-ए-पाया) में बिजनौर, नजीबाबाद एवं कोटद्वार के सीमावर्ती क्षेत्रें में जिन भू-भागों को हथिया लिया था, वह गढ़वाल के राजा को पुन: प्राप्त हुए अथवा नहीं? इस विषय में स्पष्ट जानकारी अप्राप्य है। सन् 1745 में रुहेलों की पराजय और रुहेला सरदार अली मौहम्मद ख़ाँ द्वारा समर्पण कर दिये जाने के पश्चात् मुग़ल शासक ने उसे पर्वतीय राज्य सिरमौर की तलहटी में स्थित सरहिन्द का फौजदार/चकलादार नियुक्त किया।[29]

यद्यपि सन 1745 से 1748 तक सरहिन्द के चकलादार के रूप में अली मौहम्मद ख़ाँ द्वारा अपने लिए पर्याप्त धन सम्पत्ति अर्जित करने के उल्लेख मिलते हैं, परन्तु उसके द्वारा निकटवर्ती पर्वतीय राज्य सिरमौर में अतिक्रमण अथवा सिरमौर के राजा का उत्पीड़न करने का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। इस सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सिरमौर-मुग़ल सम्बन्धों की घनिष्ठता के कारण रुहेला सरदार सिरमौर में अतिक्रमण करने का साहस नहीं जुटा सका। फिर भी सिरमौर के समकालीन राजा कीरत प्रकाश ने किसी भी संकट का सामना करने के लिए अपने पड़ोसी कहलूर एवं पटियाला के राजाओं के साथ सुरक्षात्मक सन्धियाँ कर ली थीं।[30] अली मौहम्मद ख़ाँ कटेहर में अपने पैतृक राज्य एवं कुमाऊँ के उपजाऊ तराई प्रदेश का मोह छोड़ नहीं पाया था। अत: जब सन् 1748 में अहमदशाह अब्दाली ने पंजाब पर आक्रमण किया और मुग़ल सेना अब्दाली के साथ युद्ध में व्यस्त हो गई, अली मौहम्मद ख़ाँ ने सरहिन्द से वापस कटेहर आकर

अपने पैतृक राज्य पर पुनः अधिकार कर लिया। उसने कुमाऊँ के राजा के तराई स्थित उन परगनों पर भी पुनः अधिकार कर लिया, जो तीन वर्ष पूर्व शाही सेना ने उससे खाली करा कर कुमाऊँ के राजा को दिलाये थे।[31] यद्यपि कुमाऊँ के राजा ने मुग़ल शासक को अर्ज़दाश्त भेजकर हस्तक्षेप करने की मांग की थी, परन्तु शाही सेना अब्दाली के विरुद्ध युद्ध में व्यस्त थी, अतः रुहेलों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं हो सकी।

अब्दाली से युद्ध करते हुए वज़ीर कमरुद्दीन ख़ाँ मारा गया और कुछ समय पश्चात् उसी वर्ष (सन् 1748) में मुग़ल शासक मौहम्मदशाह की भी मृत्यु हो गई। इस समय तक सिरमौर एवं गढ़वाल राज्यों की स्थिति भी चिंताजनक हो गई थी। सिरमौर के निकट स्थित सरकार/चकला सरहिन्द के चकलादार नजीबउद्दौला ने परिस्थितियों का लाभ उठा कर सिरमौर से गढ़वाल तक के सम्पूर्ण पाद-प्रदेश, गढ़वाल के राजा के अधीन दून घाटी (देहरादून) एवं चण्डी घाट (हरिद्वार) से कोटद्वार तक के भू-प्रदेशों पर अधिकार जमा लिया था।[32] सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं ने इसका प्रतिवाद मुग़ल शासक अहमदशाह (सन् 1748-1754) से किया, परन्तु अहमदशाह को उस समय इन पर्वतीय राजाओं की अपेक्षा रुहेलों का समर्थन प्राप्त करने की चिन्ता अधिक थी। उस समय सफदरजंग ने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। उसके विद्रोह के दमन के लिए मुग़ल शासक को रुहेलों की सहायता की आवश्यकता थी। नजीबउद्दौला की सहायता से सफदरजंग के विद्रोह का अन्त हो गया, परन्तु इस सैनिक सेवा के बदले में उसने मुग़ल शासक से उन भू-प्रदेशों से राजस्व की वसूली का वैधानिक अधिकार प्राप्त कर लिया, जिन पर उसने अधिकार जमा लिया था। इससे सर्वाधिक हानि गढ़वाल के राजा को हुई, क्योंकि उसके राज्य की सर्वाधिक उपजाऊ घाटी उसके हाथों से निकल कर रुहेलों के अधिकार में आ गई।[33]

इस प्रकार सन् 1752 से 1757 के बीच मध्य हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित पर्वतीय राज्यों सिरमौर, गढ़वाल एवं कुमाऊँ के तराई-भाबर प्रदेश, जहाँ पूर्व में इन पर्वतीय राज्यों की सीमायें मुग़ल साम्राज्य से मिलती थी, वहाँ रुहेलों का आधिपत्य स्थापित हो जाने से इन पर्वतीय राज्यों का मुग़ल साम्राज्य एवं मुग़ल शासक के साथ सीधा सम्पर्क/सम्बन्ध समाप्त हो गया। ऐसी स्थिति में सिरमौर के राजा के लिए पंजाब में अहमदशाह अब्दाली द्वारा नियुक्त सूबेदार और पंजाब की पहाड़ियों में अवस्थित राज्यों के लिए नियुक्त सह-सूबेदार घमण्डचन्द (जो काँगड़ा का राजा था) का महत्व अधिक हो गया, क्योंकि सिरमौर राज्य की पश्चिमी एवं दक्षिण-पश्चिमी सीमा पंजाब के पर्वतीय राज्यों से मिलती थी।[34] सिरमौर के राजा कीरत प्रकाश (सन् 1757-1773) ने अपने पड़ोसी कहलूर एवं पटियाला के राजाओं के साथ भी सुरक्षात्मक संधियाँ कर लीं,[35] क्योंकि तत्कालीन परिवेश में दुर्बल मुग़ल शासकों की अपेक्षा यह क्षेत्रीय शक्तियाँ उसके लिए अधिक उपयोगी हो सकती थी। दूसरी ओर गढ़वाल एवं कुमाऊँ के राजाओं के लिए मुग़ल शासकों की अपेक्षा वह रुहेला सरदार अधिक महत्वपूर्ण हो गये, जिन्होंने इन पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल साम्राज्य के बीच अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिए था। सन् 1761 के पानीपत के तृतीय युद्ध ने इन रुहेला नवाबों के महत्व में और अधिक वृद्धि कर दी।

पानीपत के तृतीय युद्ध से पूर्व मराठों ने इस आशा से कि मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राजा हिन्दू राजा होने के कारण मुग़लों और रुहेलों के विरुद्ध मराठों का साथ देंगे, इन राजाओं को अपने पक्ष में सम्मिलित करने का प्रयास किया।[36] यद्यपि सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं ने तटस्थता की नीति अपनाई, तथापि कुमाऊँ

के राजा दीपचन्द ने मुग़ल-रुहेला गठबन्धन का समर्थन किया और मराठों के विरुद्ध लड़ने के लिए चार हज़ार सैनिक रुहेला सरदार नजीबउददौला को उपलब्ध कराये।[37] कुमाऊँ के राजा के इस सैनिक सहयोग से कालान्तर में कुमाऊँ के साथ मुग़लों एवं रुहेलों के मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो गये।[38]

यद्यपि कालान्तर में इन तीनों पर्वतीय राज्यों के निकटवर्ती मैदानी इलाकों में रुहेलों एवं मराठों, रुहेलों-मुग़लों, रुहेलों-अवध के नवाबों के बीच संघर्ष हुआ, परन्तु उसमें इन पर्वतीय राजाओं की भागीदारी का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। वास्तव में अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इन पर्वतीय राजाओं की अपने राज्यों के निकट मैदानी इलाकों से अतिक्रमण होने का अधिक भय नहीं था। अपने तराई-भाबर इलाके में अब उनके पास खोने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। वह तराई-भाबर का अधिकांश भाग रुहेलों के हाथों गंवा चुके थे। अब उनकी चिन्ता अपने पर्वतीय प्रदेशों को नेपाल नरेश की साम्राज्यवादी नीति से बचाये रखने की थी। अन्ततः नेपाल नरेश ने सन् 1790 में कुमाऊँ, सन् 1804 में गढ़वाल तथा सन 1805-06 में सिरमौर पर अधिकार कर इन पर्वतीय राज्यों का विलय नेपाली साम्राज्य में कर लिया।[39]

III

निष्कर्ष

(1). उत्तर मुग़लकालीन शासकों ने भी इन पर्वतीय राज्यों पर प्रभुत्व बनाये रखने के प्रयास किये। यद्यपि सन् 1708 से 1715 की अवधि में इन पर्वतीय राज्यों, विशेषकर सिरमौर तथा गढ़वाल के राजाओं ने मुग़ल शासकों के प्रभुत्व की उपेक्षा करके मुग़ल सत्ता के विरोधी-सिक्खों, जाटों, गुज्जरों और बंजारों का समर्थन करने का प्रयास किया,परन्तु मुग़ल शासकों ने उनका दमन करके परिस्थितियों को नियन्त्रित कर लिया।

(2) उत्तर मुग़लकालीन शासकों ने भी अपने पूर्ववर्ती शासकों की भांति इन पर्वतीय राज्यों की पारस्परिक शत्रुता का लाभ उठाया। उत्तर मुग़लकालीन शासकों ने भी विशेषकर सन् 1708-1715 की अवधि में गढ़वाल के राजा के दमनार्थ कुमाऊँ के राजा की सैन्य शक्ति का लाभ उठाकर गढ़वाल के राजा द्वारा मुग़ल शासकों के प्रभुत्व से मुक्त होने के प्रयास को विफल कर दिया। उत्तर मुग़लकालीन शासकों ने भी कूटनीतिक एवं राजनीतिक उपायों द्वारा इन पर्वतीय राजाओं को मुग़लों के विरुद्ध कोई संयुक्त मोर्चा नहीं बनाने दिया तथा इन राज्यों के बीच शक्ति सन्तुलन बनाये रखने के प्रयास किये।

(3) मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राजाओं एवं उत्तर मुग़लकालीन शासकों के राजनीतिक-कूटनीतिक सम्बन्धों को मुग़ल दरबार की गुटबन्दियों ने भी प्रभावित किया। उन गुटबन्दियों के परिणामस्वरूप इस पर्वतीय अंचल में मुग़ल प्रभुत्व विरोधी शक्तियों का त्वरित गति से दमन नहीं किया जा सका। उन विद्रोहियों के दमनार्थ नियुक्त शाही सेना की धीमी गति के कारण कई अवसरों पर इस क्षेत्र के पर्वतीय राजा इस संशय में रहे कि शाही सेना विद्रोहियों का दमन कर भी पायेगी अथवा नहीं? इसी संशय ने इन पर्वतीय राजाओं का झुकाव विद्रोहियों की ओर कर दिया और उन्होंने मुग़ल सत्ता के विरोधियों तथा मुग़ल शासकों दोनों के प्रति दुरुभि नीति अपना कर अपने द्वार दोनों के लिए ही खुले रखे। इससे अन्ततः इन पर्वतीय राजाओं एवं मुग़ल शासकों के सम्बन्ध तनावपूर्ण बन गये।

(4) मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों और इन राज्यों के आपसी वैमनस्य ने भी इन राज्यों एवं उत्तर मुग़लकालीन शासकों के सम्बन्धों को प्रभावित किया। मध्य हिमालयी क्षेत्र के इन तीनों

पर्वतीय राज्यों की आपसी शत्रुता के कारण मुग़ल शासकों के सम्मुख यह समस्या उत्पन्न होती थी कि यदि वह इनमें से किसी एक पर शाही अनुकम्पा करते थे, तब शेष दो राज्य उनसे असन्तुष्ट हो जाते थे।

(5) मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राजाओं एवं मुग़ल शासकों के सम्बन्धों को सदभावनापूर्ण बनाये रखने में जयपुर के कछवाहा राजपूत राजा जयसिंह ने महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका निभाई। मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के समय से ही इन पर्वतीय राजाओं एवं राजा जयसिंह के बीच मैत्री सम्बन्ध दिखाई देते हैं। उत्तर मुग़लकाल में भी इन पर्वतीय राजाओं एवं मुग़ल शासकों के बीच तनाव उत्पन्न हो जाने पर राजा जयसिंह की सकारात्मक भूमिका के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। बहादुरशाह (प्रथम) के शासनकाल के पांचवे एवं छठे वर्ष के आख़बारात-ए-दरबार-ए मुअल्ला से ज्ञात होता है कि जब सन् 1711 में मुग़ल सेना ने बन्दाबहादुर को सहयोग देने के आरोप में सिरमौर के राजा को बन्दी बनाकर दिल्ली भेज दिया तथा मुग़ल शासक ने उसे कारावास में डाल दिया था, तब सिरमौर के राजपरिवार के सदस्यों ने राजा भूप प्रकाश को कारावास से मुक्त कराने के लिए राजा जयसिंह से मध्यस्थता करने का आग्रह किया। राजा जयसिंह ने स्पष्ट रूप से सिरमौर के राजपरिवार के सदस्यों को उत्तर दिया कि सिरमौर के राजा की सहमति एवं सहयोग के बिना बन्दाबहादुर एवं अन्य विद्रोही सिरमौर में प्रवेश नहीं कर सकते थे। अत: पहले उन विद्रोहियों को सिरमौर से निकाला जाये, तब बादशाह से इस विषय में सिफारिश करना सम्भव हो पायेगा।[40] अन्तत: राजा जयसिंह की सिफरिश पर लगभग एक वर्ष पश्चात् इस शर्त पर भूपप्रकाश को कारावास से मुक्त किया गया कि वह अपने राज्य से विद्रोहियों को निष्कासित करने में पूर्ण निष्ठा से मुग़ल सेना के साथ सहयोग करेगा।

सन् 1715 में मुग़ल शासक फर्रुख़सियर गढ़वाल के राजा द्वारा मुग़ल सत्ता के विद्रोहियों को शरण दिये जाने से कुपित था। अत: उसने कुमाऊँ के राजा को गढ़वाल पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। कुमाऊँ के राजा ने गढ़वाल पर आक्रमण करके गढ़वाल के एक बड़े भू-भाग पर अधिकार कर लिया। गढ़वाल के राजा फतेहसिंह (फतेहपतिशाह) ने राजा जयसिंह से आग्रह कि वह कुमाऊँ के राजा द्वारा कब्ज़ा लिए गये भू-प्रदेश दिलाने के लिए मध्यस्थता करे।[41] राजा जयसिंह ने गढ़वाल के राजा को परामर्श दिया कि वह अपने अधीन भू-प्रदेशों (दून-भाबर) से मुग़ल सत्ता के विरोधियों-विद्रोहियों को निष्कासित करे, तब ही इस विषय में कुछ किया जा सकेगा। अन्तत: गढ़वाल के राजा ने विद्रोहियों के दमनार्थ नियुक्त मुग़ल सेनानायक सैयद नज्मउद्दीन अली ख़ाँ बारह के साथ सहयोग कर उन विद्रोहियों के विरुद्ध अभियान किया, जो देहरादून-भाबर में सक्रिए थे।[42] इस प्रकार राजा जयसिंह की मध्यस्थता से गढ़वाल-मुग़ल सम्बन्ध पुन: सौहार्दपूर्ण हो गये। मुग़ल शासक ने इस सैनिक सहयोग से प्रसन्न हो कर गढ़वाल के राजा को ख़िलअत एवं घोड़ा प्रदान कर सम्मानित किया।[43] उन विज़म परिस्थितियों में, जब मुग़ल अमीर दरबारी दलबन्दियों के कारण सिक्ख, जाट एवं गुजर विद्रोहियों के दमन अभियानों में अड़चनें डाल कर अपनी स्वार्थसिद्धि में लगे थे, राजा जयसिंह की सकारात्मक भूमिका नि:सन्देह प्रशंसनीय है।

(6) अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल साम्राज्य के बीच कतिपय सम्पर्करोधी/संघर्षरोधी राज्यों के स्थापित हो जाने से इन तीनों पर्वतीय राज्यों का मुग़ल साम्राज्य एवं मुग़ल शासकों के साथ सीधा सम्पर्क-सम्बन्ध समाप्त हो गया। मध्य हिमालयी क्षेत्र के पश्चिमी छोर पर अवस्थित सिरमौर राज्य की पश्चिमी सीमा पंजाब और पंजाब के पर्वतीय अंचल (कोहिस्तान-ए-पंजाब) से

मिलती थी। सन् 1752 में अहमदशाह अब्दाली ने पंजाब पर अधिकार कर लिया। अत: पंजाब की ओर से सिरमौर राज्य का मुग़ल साम्राज्य से सीधा सम्पर्क-सम्बन्ध समाप्त हो गया।

सिरमौर राज्य की दक्षिणी सीमा मुग़ल साम्राज्य की सरकार सरहिन्द से सहारनपुर में मिलती थी और गढ़वाल राज्य की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा देहरादून, चण्डीघाट (हरिद्वार), कोटद्वार एवं नजीबाबाद में मुग़ल साम्राज्य से मिलती थी। सन् 1757 में सहारनपुर से नजीबाबाद तक के भू-प्रदेशों पर नजीबउद्दौला द्वारा अधिकार करके रुहेला राज्य की स्थापना के कारण सिरमौर एवं गढ़वाल राज्यों का मुग़ल साम्राज्य एवं मुग़ल शासकों के साथ सीधा सम्पर्क-सम्बन्ध समाप्त हो गया। कुमाऊँ राज्य की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा भी कटेहर क्षेत्र में सम्भल, आंवला, बिसौली, ठाकुरद्वारा आदि स्थानों पर मुग़ल साम्राज्य से मिलती थी, परन्तु इन क्षेत्रों पर रुहेलों द्वारा अधिकार करके स्वायत्तशासी रुहेला राज्य की स्थापना के कारण कुमाऊँ राज्य का सम्पर्क-सम्बन्ध मुग़ल साम्राज्य एवं मुग़ल शासकों के साथ समाप्त हो गया।

इस प्रकार अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्य हिमालयी क्षेत्र के इन पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल साम्राज्य के बीच रुहेलों के सम्पर्करोधी/संघर्षरोधी राज्यों की स्थापना के कारण इन पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल शासकों के बीच केवल औपचारिक सम्बन्ध ही शेष रहे। ऐसी स्थिति में इन पर्वतीय राजाओं के लिए उनकी सीमाओं के सन्निकट स्थित रुहेला नवाब मुग़ल शासकों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो गये।

सन्दर्भ

1.अकबर के शासनकाल में पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों पर प्रभुत्व स्थापना के लिए किये गये अभियानों के लिए देखें अबुलफज़ल, अकबरनामा, अंग्रेज़ी अनुवाद, भाग 2,पृ0 63,270,भाग 3, पृ0 63, 248, 810, बिब0 इंडि0 877-1886 एवं कुमाऊँ अभियान तथा कुमाऊँ के समकालीन राजा रुद्रचन्द की अकबर की भेंट के लिए देखें, अकबरनामा, वही, भाग 3,पृ0 349, 537.

2.ज़ैदी, रेहाना, मध्य हिमालय के पर्वतीय राज्य एवं मुग़ल शासक (सन 1526-1707), पृ0 200-209, 1994, दिल्ली एवं ख़ाँ, ए0आर0, चीफटेन्स इन मुग़ल एम्पायर ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 206-210, 1977, शिमला.

3. आलम,मुज़फर, द क्राइसेस ऑफ एम्पायर इन मुग़ल नॉर्थ इंडिया, पृ0 11-16,155-157,1986, दिल्ली.

4. सिंह, रणजोर कुंवर, तारीख़-ए-रियासत सिरमौर, पृ0 229-230, 191, इलाहाबाद.

5. मियाँ, गोवर्धन सिंह, हिमाचल प्रदेश का इतिहास, पृ0 331, 1996, दिल्ली.

6. देखें, बल, एस0एस0 का आलेख, "अर्ली इयर्स ऑफ गुरू गोविन्द सिंह"; प्रोसीडिंग्स ऑफ द पंजाब हिस्ट्री कांग्रेस, पृ0 63-78, 1968, पटियाला.

7-8.देखें,ग्रेवाल,जे0एस0 का आलेख,"गुरू गोविन्दसिंह और बहादुरशाह प्रथम,"इतिहास और विचारधारा: खलसा के तीन सौ साल, सम्पादक ग्रेवाल एवं बंगा,इन्दु,पृ0 54-55, 2001, दिल्ली.

9. बन्दाबहादुर (लक्ष्मनदास/माधोदास बैरागी) के व्यक्ति-कृतित्व के लिए देखें,गुप्ता,हरिराम,हिस्ट्री ऑफ सिक्ख्स, भाग 2,पृ0 2-3,1939,कलकत्ता.

10. आलम,मुज़फर का आलेख ''बन्दाबहादुर के नेतृत्व में सिक्ख विद्रोह'',इतिहास और विचारधारा:खालसा के तीन सौ साल,पृ0 58-59.

11-12.सिक्ख हिस्ट्री आफ पर्शियन सोर्सेज़,सम्पादक ग्रेवाल,जे0एस0 एवं हबीब,इरफान,पृ0 147-148,2001,दिल्ली.

13. डबराल, शिवप्रसाद, उत्तराखण्ड का इतिहास, भाग 4, पृ0 336,1977,दुगड्डा,गढ़वाल.

14-18.आलम,मुज़फर,द क्राइसेस ऑफ एम्पायर इन मुग़ल नॉर्थ इंडिया,पृ0 156,163,167-168.

19-20.पांडे,बद्रीदत्त, कुमाऊँ का इतिहास,पृ0 305-307,1935,अल्मोड़ा एवं आलम, मुज़फर, वही, पृ0 168 एवं सन्दर्भ सं0-139.

21.सिद्दीकी,नफीस,रोहेला इतिहास,पृ0 35, 2005, रामपुर.

22.पांडे,बद्रीदत्त,वही, पृ0 311 एवं एटकिन्सन,ई0टी0,हिमालयन गज़ेटियर (हिन्दी रूपान्तर), थपलियाल, प्रकाश, भाग2, खण्ड,2 पृ0 314,2003, देहरादून (हिन्दी रूपान्तर), थपलियाल, प्रकाश, भाग2, खण्ड,2 पृ0 314, 2003, देहरादून.

23.डबराल, शिवप्रसाद, वही, भाग 10 (कुमाऊँ), पृ0153, पांडे, बद्रीदत्त, वही, पृ0 312 एवं सिद्दीकी, वही, पृ0 36 -37.

24. देखें, कुमाऊँ के राजा द्वारा प्रेषित अर्ज़दाश्त एवं उसके प्रत्युत्तर में मुग़ल शासक मौहम्मदशाह द्वारा जारी 30 रबि-उल-अव्वल,25 जुलूस, 1156 हिजरी (24 मई, सन 1714) का फरमान, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली.

25-28.पांडे, बद्रीदत्त, वही, पृ0 327, 330 एवं डबराल, शिवप्रसाद, वही, भाग 10, पृ0 162-163,168.

29. सिद्दीकी, नफीस, वही, पृ0 72.

30. सेमवाल, पी0एन0, पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के अतीत की झांकी, पृ0 69, 1983, दिल्ली.

31-33.सिद्दीकी, नफीस, वही, पृ0 75,103-104 एवं डबराल, वही, भाग12, पृ0 131-133.

34-35.सिंह, रणजोर कुंवर,वही,पृ0 127.

36-38.डबराल, वही, भाग 10, पृ0 180, पांडे, वही, पृ0 332-333, 335.

39-एटकिन्सन, ई0टी0, वही, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 344-354.

40-43.आलम, मुज़फर, वही, पृ0 165-169.